महिला किसान ने बदला खेती का ढर्रा

मझगवां। सतना जिला के मझगवां विकासखंड मुज़्यालय से लगभग 22 किलोमीटर दूर ग्राम पड़री की महिला किसान गुड्डुन कुशवाहा जिले की स्वावलंबी महिला कृषक बन गई है। परंपरागत खेती धान, गेंहू की जगह उन्होंने सज़्जी की खेती को अपनाकर उत्पादन में मिसाल कायम किया है। उन्होंने अलाभकर खेती को लाभकर खेती में बदल कर क्षेत्र में अन्य महिला कृषकों के लिए स्वावलज़्बी महिला कृषक बन गई है।

चार- पांच वर्ष पूर्व गुड्डुन एक एकड़ जमीन में धान एवं गेंहू की खेती किया करती थीं। जिससे उनके सात सदस्यों वाले परिवार का भरण पोषण ठीक से नहीं हो पाता था। खेती अच्छी नहीं होने के कारण परिवार चलाने में संकट के साथ बच्चों की शिक्षा भी ठीक से नहीं हो पा रही थी। इसी दौरान उनकी मुलाकात समाज शिल्पी दंपज़ि परिवार अक्षय तिवारी एवं विजय लक्ष्मी से हुई । समाज शिल्पी दंपज़ि परिवार ने उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वैज्ञानिको से मिलवाया। केंद्र के वैज्ञानिकों ने ट्यूबवेल लगाने के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत 40 हजार की राशि उपलज़्ध कराई। गुड्डुन द्वारा सज़्जी की खेती की इच्छा को देखते हुए उन्हें सज़्जी उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। गुड्डुन को कम समय में बाजार में अधिक दाम पर बिकने वाली सज़्जी की खेती करने की समझाइश दी गई। उन्हें यह भी बताया गया कि कम पानी में तैयार होने वाली फसल किस तरह से ली जा सकती है। महिला किसान ने सज़्जी उत्पादन की आधुनिक तकनीक को सीखा और अपने एक एकड़ के खेत में मूली, पालक, मेथी, लालभाजी, टमाटर, फूलगोभी, मटर, पज़ागोभी, आलू, प्याज, लहसुन, भिन्डी, मिर्च की खेती शुरू की। खेत की मेढ़ पर अमरुद, आंवला, पपीता के पौधों का रोपण भी किया। आधुनिक तकनीक अपनाने से सज़्जी की अच्छी पैदावार हुई। इससे उनकी आमदनी बढ़ने लगी। आज वह महिला कृषक ने पज़्का मकान बनवा लिया है। बच्चों के स्कूल का खर्च उठा रही है और सात सदस्यों वाले परिवार का भरण-पोषण अच्छे से हो रहा है। मझगवां के ही राजेन्द्र कुमार कुशवाहा ने भी कुछ इसी तरह का प्रयोग किया। वह ढाई एकड़ जमीन में धान, उर्द, गेंहू एवं चना की खेती करते थे। उससे उनका परिवार बड़ी मुश्किल से चलता था। वह मझगवां कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के सज़्पर्क में आए। वैज्ञानिकों से तकनीकी परामर्श लिया। कृषि विज्ञान केंद्र पर आयोजित सज़्जी एवं मसाला की खेती पर प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। वैज्ञानिकों ने अनाज, दलहन एवं तिलहनी फसलों के साथ सज़्जी एवं मसाला की खेती करने की सलाह दी। इसके बाद डेढ़ एकड़ खेत में सज़्जी पैदा करने की योजना बनाई। योजना अनुरूप उन्होंने खरीफ में धान, उर्द, मूंग, फूल गोभी, मूली, बैगन, हरीमिर्च, धनिया पज़ी, एवं पालक की खेती की। उसके बाद रबी मौसम में गेंहू, चना, सरसों आलू, प्याज, लहसुन, फूल गोभी, बंद गोभी एवं मिर्च की खेती की गई। गर्मी के मौसम में आधा एकड़ खेत में लौकी, खीरा, ककड़ी, प्याज एवं मूली की खेती कराई गई। वैज्ञानिकों के परामर्श के अनुरूप भैस पालन के साथ साथ मैंने जैविक खाद बनाना प्रारज़्भ किया। इस खेती पद्धति को अपनाने से किसान राजेन्द्र की आमदनी भी बढ़ गई है। इस समय क्षेत्र के 78 किसान खेती पद्धति में बदलाव करके अपनी आमदनी बढ़ा चुके हैं।

महिला किसान ने सब्जी उत्पादन की आधुनिक तकनीक को सीखा और अपने एक एकड़ के खेत में मूली, पालक, मेथी, लालभाजी, टमाटर, फूलगोभी, मटर, पत्तागोभी, आलू, प्याज, लहसुन, भिन्डी, मिर्च की खेती शुरू की।